ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 13 अंक 37 कुल पृष्ठ-8 10 से 16 मई, 2018 दयानन्दाब्द 194 सृष्टि सम्वत् 1960853119 सम्वत् 2075 ज्ये.कृ.-13

प्रसिद्ध समाजसेवी तथा आर्य नेता प्रो. श्योताज सिंह जी की स्मृति में आयोजित की गई श्रद्धांजलि सभा

बेजुबान मजदूरों की आवाज के रूप में हमेशा याद किये जायेंगे प्रो. श्योताज सिंह

– स्वामी अग्निवेश

सादा जीवन उच्च विचार के स्वर्णिम आदर्श को अपनाते हुए प्रो. श्योताज सिंह जी ने स्थापित किये कई कीर्तिमान

– स्वामी आर्यवेश

सैकड़ों गणमान्य व्यक्तियों ने अर्पित किये श्रद्धा सुमन

आर्य समाज के नेता व गरीब,मजदूर व दलितों के रहनुमा प्रो. श्योताज सिंह की स्मृति में दिनांक 7 मई, 2018 को संकल्प सभा का आयोजन उनके पैतृक गांव जैनाबाद में किया गया।कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रसिद्ध समाजसेवी स्वामी अग्निवेश जी ने की। इस अवसर पर स्वामी अग्निवेश जी ने कहा कि हम सबको अपने बुजुर्गों का जीवित श्राद्ध करना चाहिए। उनके द्वारा किये गए कार्यों का गुणगान उनके जीते जी करेंगे तो उनके जीवन मे उत्साह आएगा।

उन्होंने श्योताज सिंह जी को याद करते हुये कहा कि उनका पूरा जीवन जोखिम भरा रहा। वो बेजुबान मजदूरों की आवाज के रूप में हमेशा याद किये जायेंगे। स्वामी अग्निवेश जी ने कहा कि प्रो. श्योताज सिंह जी ने हमारे साथ अपने जीवन के सुनहरे 40 वर्ष कंधे से कंधा मिलाकर विशिष्ट सहयोगी की तरह बिताये हैं। मैंने अनुभव किया कि वे हृदय के बड़े साफ तथा सहृदय व्यक्ति थे। बंधुआ मुक्ति मोर्चा के कार्य में बड़े–बड़े खतरे उठाकर उन्होंने परतंत्रता तथा अभावों का दंश झेल रहे हजारों बच्चों को मुक्त कराया और उन्हें समाज की मुख्यधारा से जोड़ने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया। उनकी दिनचर्या अत्यन्त नियमित थी और वे सफेद वस्त्रों में रहकर संन्यासी जैसा जीवन व्यतीत करते थे। प्रोफेसर साहब की महर्षि दयानन्द और आर्य समाज में गहरी आस्था थी और आर्य समाज के कार्य के लिए वे सर्वात्मना समर्पित थे। बंधुआ मुक्ति मोर्चा के माध्यम से उन्होंने जो कार्य किये वो कार्य कोई सामान्य व्यक्ति नहीं कर सकता। उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन असहाय, निर्बल तथा अन्याय सहने वाले बच्चों को समर्पित कर दिया था। वे कुशल संगठक तथा आन्दोलन का नेतृत्व करने में विशेष महारथ रखते थे। हमारे साथ मिलकर उन्होंने विभिन्न आन्दोलनों में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई और अपनी संगठन शक्ति का परिचय दिया।

आर्य समाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि आर्य समाज ने एक संघर्षशील नेता खो दिया जिसकी भरपाई आसान नही है। स्वामी जी ने प्रो. श्योताज सिंह जी के संस्मरण सुनाते हुए कहा कि प्रो. साहब मेरे अत्यन्त आत्मीय थे और उन्होंने समय–समय पर अपने प्रबुद्ध तथा दूरदर्शी विचारों से अनेकों कठिन परिस्थितियों में हमारा सहयोग किया था। उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन दबे–कुचले लोगों के जीवन को उन्नत करने में लगा दिया। वे अत्यन्त उत्साही एवं कर्मठता से ओत–प्रोत व्यक्तित्व के धनी थे। अनेकों आन्दोलनों को अपने कुशल संयोजन के बल पर उन्होंने सफलता तक पहुँचाया था। प्रोफेसर साहब अत्यन्त संकल्पशील व्यक्ति थे जो ठान लेते थे उसे पूरा करके

ही छोड़ते थे। सादा जीवन उच्च विचार को जीवन में धारण करते हुए उन्होंने अप्रतिम कार्यों को करके अपना जीवन अनुकरणीय बना लिया था। आज हम सबको उनके जीवन से प्रेरणा लेते हुए उनके संकल्पों को पूरा करना है। स्वामी जी ने बताया कि 12 मई, 2018 (शनिवार) को प्रो. साहब की संकल्प सभा नई दिल्ली में आर्य समाज के विश्व मुख्यालय, सार्वदेशिक सभा कार्यालय 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2 में आयोजित होगी।

वरिष्ठ संन्यासी स्वामी सुधानंद योगी ने कहा कि श्योताज सिंह आजीवन अन्याय के विरुद्ध लड़ते रहे। अन्याय के विरुद्ध लड़ाई जारी रखना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या ने कहा कि हम सब आज प्रो. साहब के जीवन से अच्छे कर्म करने का संकल्प लें तथा उनके विचारों को जन जन तक पहुंचा कर समाज में फैली बुराइयों को मिटाने में एक विशेष भूमिका निभानी चाहिए।

बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय संयोजक बहन प्रवेश आर्या ने कहा कि उनका पूरा जीवन अपने आप में प्रेरणादायी रहा। आर्य समाज द्वारा संचालित बेटी बचाओ अभियान को प्रारम्भ करने में प्रो.साहब का बहुत बड़ा सहयोग रहा है। केंद्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ अनिल आर्य ने कहा कि आर्य समाज ने एक ऐसे नेता को खो दिया है जिसने हमेशा अन्याय के विरुद्ध आवाज बुलन्द की। आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के पूर्व प्रधान ओम प्रकाश एडवोकेट ने कहा कि उनके कार्य ही उनको हमेशा जीवित रखेंगे।

डी एफ एस सी रामवतार यादव ने कहा कि वो सफेद कपड़ो में संन्यासी थे।सादगी के सागर थे।गुलामगिरी के विरुद्ध लड़ने वाले योद्धा थे। अलीगढ़ (उ.प्र.) गुरुकुल के संचालक स्वामी श्रद्धानंद ने कहा कि मृत्यु जीवन का अंतिम सत्य है, लेकिन जिसके जाने से समाज को क्षति हो,ऐसे व्यक्ति का जाना निश्चित रूप से बहुत बड़ी क्षति है। बिहार से आये मौलाना साहिन कासमी ने कहा कि प्रो. साहब ने मजहब की दीवारों को तोड़कर गरीब व मजलूमों के हक अधिकारों की लड़ाई लड़ी।

इस अवसर पर स्वामी शरणानंद जी, प्रो. अनिरुद्ध यादव, डॉ अतुल यादव, कुरुक्षेत्र, श्री राजेन्द्र सिंह बिसला पूर्व विधायक, श्री प्रेम कुमार मित्तल एडवोकेट, श्री जगदीश आर्य, श्री ऋषिपाल आर्य फरीदाबाद, श्री मनोज सिंह, श्री विष्णुपाल, श्री रमेश आर्य, श्री सोनू, श्री अशोक वशिष्ठ आदि दिल्ली, श्री रामनिवास आर्य नारनौल, श्री रामनिवास गांधी कोसली, साध्वी पुष्पा शास्त्री, बंधुआ मुक्ति मोर्चा राजस्थान के प्रधान राजेश, हवा सिंह हुड्डा, प्रसिद्ध इतिहासकार के.सी. यादव, हरिद्वार से आचार्य अखिलेश, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री बिरजानन्द एडवोकेट, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद हरियाणा के प्रधान ब्र दीक्षेन्द्र आर्य, रमेश पायलेट, महामन्त्री ,हरियाणा यादव सभा, आचार्य योगेंद्र, मा. पोहप सिंह, धर्मबीर आर्य, बहरोड़, मधुर प्रकाशन के मालिक मधुर प्रकाश,राष्ट्रीय शिक्षक संघ के प्रदेश प्रवक्ता प्रदीप कुमार, महेंद्र भाई, जसवंत आर्य, ब्र. यशदेव, धर्मेन्द्र आर्य, छपरौली, उ.प्र. ब्र. गजराज सिंह, रामनिवास गांधी, रामपाल यादव, महेंद्र सरपंच डहीना, विद्यासागर आर्य सहित सैकड़ों व्यक्तियों ने पहुँचकर प्रो. श्योताज सिंह जी को श्रद्धा सुमन अर्पित किये। श्री सुरेंद्र यादव ने सभी का आभार किया तथा मंच संचालन वेदपाल शास्त्री ने किया।

इससे पूर्व विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें उनके परिवार के लोगों ने अत्यन्त श्रद्धा के साथ आहुतियाँ अर्पित की।

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

गरीबों, मज़दूरों एवं किसानों के रहनुमा आर्य नेता प्रो. श्योताज सिंह जी का संक्षिप्त परिचय

पारिवारिक पृष्ठभूमि : हरियाणा के रेवाड़ी जिले के ग्राम जैनाबाद में सन् 1942 में जन्में प्रो. श्योताज सिंह के पिता जी का नाम श्री चन्द्रभान यादव तथा माता जी का नाम श्रीमती सुरजी देवी था। उनका लालन–पालन उनके चाचा श्री रामस्वरूप यादव ने किया क्योंकि उनके पिता श्री चन्द्रभान जी की मृत्यु तभी हो गई थी जब प्रो. साहब एक वर्ष के थे। उनके चाचा आज़ाद हिन्द फौज में थे और उन्हें सात साल की काले पानी की सज़ा अंग्रेजों ने दी थी उसके कारण वे सिंगापुर जेल में बन्द रहे थे। उनके पिता जी भी फौज में भर्ती हुए थे तथा वहीं पर उनकी मृत्यु हो गई थी। जब श्योताज सिंह जी ने दसवीं पास की तो उनके चाचा जी ने उनकी शादी करने का दबाव बनाया किन्तु वे शादी के लिए तैयार नहीं हुये तथा इसमें उन्होंने अपने ताऊ कर्नल साहब की मदद ली और वे आजीवन अविवाहित रहते हुये वैराग्यपूर्ण जीवन के पथिक बने। उनके विचारों में देशभक्ति, सेवा, ईमानदारी तथा नैतिकता कूट–कूट कर भरी हुई थी। इसी प्रकार धार्मिकता की प्रतिमूर्ति माता की गोद में पले–बढ़े प्रो. श्योताज सिंह जी को बचपन में ही ये संस्कार अपनी करुणामयी माता से मिले। गाँव के एक प्रतिष्ठित किसान परिवार के होनहार बालक श्योताज सिंह प्रारम्भ से ही स्वाभिमानी स्वभाव के थे। पढ़ने में उनकी विशेष रुचि थी। इसीलिए अपने सभी भाई बहनों में वे अपनी विशेष प्रतिभा के बल पर उच्च शिक्षा प्राप्त करने में सफल हुये। प्रो. श्योताज सिंह जी ने एम.आर.हाईस्कूल डहीना से मैट्रिक, गवर्नमेन्ट कॉलेज नारनौल से बी.ए. तथा कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से एम.ए. पास की। दसवीं कक्षा में वे प्रथम स्थान पर रहे। राजनीति शास्त्र में स्नातकोत्तर स्तर की डिग्री प्राप्त करके वे डिग्री कॉलेज में प्राध्यापक नियुक्त हुए। पहले नाहड़ तथा बाद में सिधरावली, आर.बी.एस. कालेज रेवाड़ी तथा बावल में भी अध्यापन कार्य किया।

सामाजिक क्षेत्र में :– सन् 1977 में लोकनायक जय प्रकाश नारायण के नेतृत्व में राष्ट्रव्यापी सत्ता परिवर्तन के समय प्रो. श्योताज सिंह ने भी अपने प्राध्यापक पद को त्यागकर सामाजिक जीवन में पदार्पण किया। हरियाणा की जनता पार्टी सरकार में शिक्षामंत्री बने आर्य संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी के साथ जुड़ गये तथा उनके राजनीतिक सलाहकार के रूप में सहयोगी बने। सन् 1980 में जब स्वामी अग्निवेश जी के नेतृत्व में बंधुआ मजदूरी प्रथा के विरूद्ध ऐतिहासिक आन्दोलन प्रारम्भ हुआ तब आप भी बंधुआ मुक्ति मोर्चा के संस्थापकों में थे तथा प्रारम्भ से इस संगठन के आप पहले मंत्री तथा बाद में महामन्त्री बने और जीवन की

आखिरी श्वांस तक इसी पद पर कार्य करते रहे।

कार्य एवं गतिविधियाँ : बंधुआ मुक्ति मोर्चा के साथ–साथ प्रो. श्योताज सिंह आर्य समाज के भी एक मजबूत स्तम्भ थे। स्वामी इन्द्रवेश जी एवं स्वामी अग्निवेश जी के नेतृत्व में आर्यसमाज की समस्त गतिविधियों में वे सदैव अग्रणी रहे। बंधुआ मुक्ति मोर्चा के माध्यम से पत्थर खदानों, ईंट भट्ठों, चूड़ी एवं कालीन उद्योगों तथा विविध क्षेत्रों में प्रचलित बन्धुआ मजदूरी प्रथा के विरूद्ध चलाये गये प्रचण्ड आन्दोलन से पूरे देश में लगभग दो लाख बंधुआ मजदूरों को मुक्त कराने में प्रो. श्योताज सिंह ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस दौरान उनके ऊपर खान माफिया द्वारा कातिलाना हमले भी किये गये। कई बार जानलेवा हमलों में वे घायल हुये किन्तु ईश्वर की कृपा से स्वस्थ होकर पुनः कार्य में जुट गये। बंधुआ मजदूरी प्रथा के अभिशाप के अतिरिक्त उन्होंने किसानों, महिलाओं, दलितों, पीड़ितों तथा शोषितों के लिए समय–समय पर चले आन्दोलनों में न केवल भाग लिया बल्कि उनका कुशल संयोजन भी किया। इसी तरह आर्य समाज द्वारा चलाये गये शराबबंदी आन्दोलन, किसान आन्दोलन, कन्याभ्रूण हत्या विरोधी आन्दोलन तथा पाखण्ड विरोधी आन्दोलन आदि में भी प्रो. श्योताज सिंह ने अपने विशिष्ट साथियों सर्वश्री स्वामी आर्यवेश, विरजानन्द, प्रो. विट्ठलराव, डॉ. जे.एस. यादव, प्रो. के.सी. यादव तथा स्वामी विजयवेश आदि के साथ अग्रणी नेता की भूमिका निभाई। स्वामी अग्निवेश जी के नेतृत्व में बंधुआ मुक्ति मोर्चा के तत्वावधान में दिल्ली से देवराला तक की सती प्रथा विरोधी जन–चेतना यात्रा का आपने कुशल संयोजन किया जिसके परिणामस्वरूप पहली बार देश में सती प्रथा के विरुद्ध कड़ा कानून बनाया गया। इसी प्रकार हरियाणा में किये गये शराबबन्दी आन्दोलनों का भी आपने संयोजन किया जिसके फलस्वरूप हरियाणा सरकार ने पूरे प्रदेश में शराबबन्दी लागू की।

विदेश यात्रायें : मानव अधिकारों के सवाल पर देश–विदेश में बड़े–बड़े मंचों पर उन्होंने आवाज उठाई। अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) तथा संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा आयोजित अनेक अन्तर्राष्ट्रीय सेमीनारों में वे जेनेवा (स्विट्ज़रलैण्ड), मास्को (रूस), फ्रैंकफर्ट (जर्मनी), न्यूयार्क एवं वाशिंगटन डी.सी. (अमेरिका), सिंगापुर, थाईलैण्ड, नेपाल आदि देशों में सम्मिलित हुये तथा अपनी प्रखर शैली में मानव अधिकारों पर आवाज उठाई।

प्रो. साहब एक कुशल वक्ता, प्रखर लेखक, गम्भीर मनीषी, स्वाध्यायशील, परोपकारी, संघर्षशील, गरीबों के मसीहा थे। उनका जीवन सादगी, सात्विकता, मितव्ययता, त्याग एवं तप जैसे गुणों से ओत–प्रोत था। उनका एक–एक श्वांस समाज के शोषित एवं पीड़ित लोगों की सेवा, मानवीय मूल्यों तथा प्राचीन वैदिक संस्कृति के लिए प्रचार–प्रसार में बीता। प्रो. श्योताज सिंह आर्य समाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की कार्यकारिणी के सदस्य, युवा संगठन सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के कोषाध्यक्ष, स्वामी इन्द्रवेश प्रतिष्ठान के संस्थापक सदस्य, अग्निलोक आश्रम बहल्पा (गुड़गांव) के संचालक, 'राजधर्म' पत्रिका के सम्पादक, धर्म प्रतिष्ठान के सदस्य, गुरूकुल इन्द्रप्रस्थ मैनेजमेन्ट कमेटी के उपप्रधान आदि महत्वपूर्ण दायित्वों का निर्वहन करते हुये लगभग 40 वर्ष समाज सेवा में समर्पित रहे। देश की समस्त समस्याओं का समाधान राजनीतिक ताकत से सम्भव है, इस विचार से प्रभावित होकर उन्होंने राजनैतिक गतिविधियों में भी अपनी भूमिका निभाई। जाटूसाना क्षेत्र से विधान सभा का चुनाव भी लड़ा, गाँव की पंचायत के भी वे सदस्य रहे। उनका व्यक्तित्व बहुआयामी गुणों से सम्पन्न था। 28 अप्रैल, 2018 को ब्रह्ममुहूर्त में वे अपने नश्वर शरीर को त्यागकर अनन्त यात्रा को प्रस्थान कर गये। उनके निधन से समाज की अपूर्णीय क्षति हुई है। उनके जीवन के विभिन्न पहलुओं पर बहुत कुछ लिखने की जरूरत है। यहाँ पर उनका संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत कर उन्हें श्रद्धांजलि समर्पित है।

28वाँ वेद पारायण यज्ञ
(यजुर्वेद पारायण यज्ञ एवं सत्संग समारोह)
कार्यक्रम स्थल :– ग्राम नेनौरा, वाया–पिपल्या मण्डी, जिला–मन्दसौर (म. प्र.)

परम पिता परमात्मा की महती कृपा से हमारे यहाँ (ग्राम नेनौरा, जिला–मन्दसौर, मध्य प्रदेश में) दिनांक 15 से 18 मई, 2018 तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ तथा भजन एवं प्रवचन का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें स्वामी धर्मानन्द जी (उड़ीसा), स्वामी श्रद्धानन्द जी (पलवल), आचार्य योगेन्द्र जी याज्ञिक (होशंगाबाद), आचार्य मनुदेव जी (आमसेना), पं. योगेश दत्त जी (बिजनौर), पं. केशव देव जी (सुमेरपुर), डॉ. सीमा (चित्तौड़गढ़) आदि विद्वान् उपदेशक, संन्यासी एवं महात्मा पधार रहे हैं। इस अवसर पर सत्संग में सम्मिलित होकर धर्मलाभ प्राप्त करें।

कार्यक्रम

दिनांक – 15 से 17 मई, 2018 (प्रतिदिन)
प्रातः 8 से 10 बजे तक यज्ञ एवं प्रवचन,
सायं 4.30 से 6.30 बजे तक यज्ञ,
रात्रि 8 से 10.30 बजे तक भजन एवं प्रवचन।

दिनांक – 15 मई, 2018 (मंगलवार)
प्रातः 10 से 11.30 बजे तक समूहगान प्रतियोगिता

दिनांक – 16 मई, 2018 (बुधवार)
प्रातः 10 से 11.30 बजे तक शुद्ध मन्त्रोच्चारण प्रतियोगिता

दिनांक – 17 मई, 2018 (गुरुवार)
प्रातः 10 से 11.30 बजे तक भाषण प्रतियोगिता

दिनांक – 18 मई, 2018 (शुक्रवार)
प्रातः 7 बजे शोभायात्रा
8 से 10 बजे तक यज्ञ की पूर्णाहुति तथा भजन प्रवचन। 10 से 10.30 बजे तक सम्मान समारोह, धन्यवाद व शांतिपाठ।

आयोजक – आचार्य सोमदेव शास्त्री, प्रणव एवं अनिरुद्ध शास्त्री
मो.:– 9869668130, 9869162041

अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन हरिद्वार

दिनांक–6 से 8 जुलाई, 2018 के सम्बन्ध में

आवश्यक सूचनाएँ

आप अपने आने की सूचना अग्रिम दें

जो महानुभाव तथा जो गुरुकुल इस महासम्मेलन में आना चाहते हैं उनसे प्रार्थना है कि वे अग्रिम रूप से अपने आने की सूचना सार्वदेशिक सभा के कार्यालय ''दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2 में अविलम्ब देने की कृपा करें। ताकि आपके आवास तथा भोजन आदि की समुचित व्यवस्था की जा सके।

देश–विदेश के सभी गुरुकुल महासम्मेलन में सम्मिलित होने के लिए तैयारी करें

देश–विदेश में चल रहे छात्र एवं छात्राओं के समस्त गुरुकुलों के आचार्यों, आचार्याओं एवं व्यवस्थापकों से सानुरोध प्रार्थना है कि वे अपने–अपने गुरुकुलों के सभी छात्रों को महासम्मेलन में लाने की योजना बनायें। इस अवसर पर गुरुकुलों के आचार्यों का महासम्मेलन की ओर से अभिनन्दन भी किया जायेगा।

गुरुकुलों के छात्र एवं छात्राएँ महासम्मेलन में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करने की तैयारी करे

गुरुकुल महासम्मेलन में प्रयास किया जायेगा कि गुरुकुलों के छात्र एवं छात्राओं को अपनी प्रतिभा का परिचय देने के लिए विभिन्न सम्मेलनों में अवसर दिया जायेगा। अतः आप सब अभी से वेद, दर्शन, अष्टाध्यायी आदि ग्रन्थों को कंठस्थ करने तथा भाषण एवं नाटक आदि तैयार करने में जुट जायें।

दान की अपील

महासम्मेलन की व्यवस्था के लिए विपुल धनराशि की आवश्यकता होगी। अतः सभी आर्य समाजों तथा दानवीरों से सानुरोध प्रार्थना है कि वे वैदिक संस्कृति एवं आर्ष शिक्षा प्रणाली को प्रतिष्ठित करने वाले इस महायज्ञ में अपनी आहुति अवश्य डालें। इसके लिए आप अपनी संस्था, आर्य समाज या व्यक्तिगत रूप से दान देकर तथा अपने प्रयत्न से दान संग्रह करके सम्मेलन हेतु भिजवाकर हमारा सहयोग करें। बूंद–बूंद से घड़ा भरता है अतः प्रत्येक आर्य एवं गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के समर्थक को इस अवसर पर प्रयास करना चाहिए कि अधिक से अधिक लोगों के पास जाकर धन एकत्रित करें तथा उन्हें महासम्मेलन में आने का निमंत्रण दें।

6 से 8 जुलाई, 2018 को कोई अन्य कार्यक्रम न रखने की अपील

अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन के अवसर पर 6 से 8 जुलाई, 2018 को कोई भी आर्य समाज एवं संस्था अन्य कोई कार्यक्रम आयोजित न करके हरिद्वार पहुँचने की कोशिश करें। इससे आर्य समाज का संगठन अनुशासित एवं प्रभावशाली बनेगा। हम सभी के प्रयास एवं सामूहिक शक्ति प्रदर्शन से हम अपनी बात सरकार से मनवाने में अवश्य सफल होंगे।

परस्पर के मतभेद भुलाकर, आओ! गुरुकुल महासम्मेलन को सफल बनायें

हमारी यह हार्दिक इच्छा है कि अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन सभी प्रकार के मतभेद भुलाकर किया जाये। अतः आर्य समाज के समस्त नेताओं, अधिकारियों तथा वरिष्ठ कार्यकर्ताओं से सानुरोध प्रार्थना है कि हम सभी इस कार्यक्रम के माध्यम से एक मंच पर एकत्रित होने का मन बनायें ताकि समस्त आर्य जनता उत्साह एवं उमंग से ओत–प्रोत हो जाये।

– स्वामी आर्यवेश, प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली–2

स्वनामधन्य स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती (चम्बा) का 79वाँ जन्मोत्सव समारोह धूमधाम के साथ सम्पन्न

स्वामी सुमेधानन्द जी आर्य जगत् के वीतराग संन्यासी थे

– स्वामी आर्यवेश

आर्यों का तीर्थ स्थल है दयानन्द मठ चम्बा
– आचार्य रामानन्द

स्वामी सुमेधानन्द जी का जीवन सदैव प्रेरणा देता रहेगा
– रामफल आर्य

मेरे जीवन का निर्माण स्वामी जी के सहयोग से हुआ
– डॉ. करम सिंह

पूज्य चरण के आशीर्वाद से आजीवन मठ की सेवा करता रहूँगा
– आचार्य महावीर सिंह

हिमाचल प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली तथा उत्तर प्रदेश के गणमान्य आर्यों ने उत्साह के साथ भाग लिया

आर्य समाज के महान संन्यासी वैदिक विरक्त मण्डल एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा संचालन समिति के पूर्व अध्यक्ष, दयानन्द मठ चम्बा के संचालक पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती का 79वाँ जन्मोत्सव समारोह 4 से 6 मई, 2018 को जोश एवं खरोस के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी सवितानन्द जी सरस्वती, महामण्डेलश्वर महन्त गंगा दास जी, आर्य समाज शिमला के प्रधान एवं उद्भट्ट वैदिक विद्वान आचार्य रामानन्द जी, आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश के उपप्रधान श्री रामफल जी आर्य, आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश के मंत्री डॉ. करम सिंह आर्य, उपप्रधान श्री विपीन महाजन, हिमाचल प्रदेश विधानसभा के उपाध्यक्ष श्री हंसराज जी, स्थानीय विधायक श्री पवन नैय्यर, पूर्व विधायक श्री सुरेन्द्र भारद्वाज, पूर्व विधायक श्री नैय्यर जी, समाजसेवी श्री कमल ठाकुर, श्री राजकुमार ठाकुर, श्री अमर चन्द्र शर्मा, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के महामंत्री श्री बिरजानन्द एडवोकेट, सार्वदेशिक सभा के उपमंत्री श्री मधुर प्रकाश शास्त्री, आर्य समाज छपरौली के उपप्रधान श्री धर्मेन्द्र पहलवान, भजनोपदेशक श्री संदीप आर्य तथा श्री सतीश सुमन आदि ने समारोह में सम्मिलित होकर स्वामी सुमेधानन्द जी को श्रद्धांजलि अर्पित की।

कार्यक्रम का शुभारम्भ प्रातः यज्ञ के माध्यम से हुआ। इसमें ब्रह्मा पद को स्वामी सवितानन्द जी ने सुशोभित किया तथा वेदपाठ स्वामी सुमेधानन्द शिष्य मण्डल के सदस्यों तथा दयानन्द उच्च माध्यमिक विद्यालय की छात्र–छात्राओं द्वारा किया गया।

यज्ञ के उपरान्त प्रातः 11 बजे सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने ध्वजारोहण करके त्रिदिवसीय समारोह का विधिवत उद्घाटन किया। उनके साथ गुरुकुल करतारपुर के प्रधान श्री ध्रुव मित्तल विशिष्टि अतिथि के रूप में ध्वजारोहण कार्यक्रम में सम्मिलित हुए।

इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी, महन्त गंगादास जी, श्री ध्रुव मित्तल जी तथा गुरुकुल करतारपुर के आचार्य डॉ. उदयन जी ने सम्बोधित किया। इस कार्यक्रम का संयोजन विद्यालय की उपप्रधानाचार्या तथा दयानन्द मठ प्रबन्ध समिति के सचिव स्व. श्री ऋषि कुमार आर्य की धर्मपत्नी श्रीमती करूणा आर्या एवं आचार्य योगराज ने संयुक्त रूप से किया।

विशिष्ट अतिथि श्री ध्रुव मित्तल ने छात्र–छात्राओं का आह्वान किया कि विद्वानों के मुख से सुनी हुई बातों को वे जीवन में उतारने का प्रयत्न करें तभी उन्हें व्याख्यान सुनने का जीवन में लाभ होगा। उन्होंने स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती को अपनी ओर से भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

मध्यान्ह 2 बजे से विशाल शोभा यात्रा मठ से प्रारम्भ हुई और चौहान तथा चम्बा के मुख्य बाजार में होती हुई वापिस मठ में सम्पन्न हुई। शोभा यात्रा का नेतृत्व सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने किया। उनके साथ स्वामी सोम्यानन्द, स्वामी दिव्यानन्द, स्वामी ब्रह्मानन्द, स्वामी संतोषानन्द आदि संन्यासी तथा गणमान्य महानुभाव शोभा यात्रा में साथ चले। यात्रा का स्थान–स्थान पर फलों एवं फूलों, जल एवं जलपान से स्वागत किया गया। यात्रा में स्थानीय विधायक श्री पवन नैय्यर ने भी सम्मिलित होकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। यात्रा का संयोजन शिक्षक नेता श्री चतर सिंह सूर्यवंशी जी ने किया तथा उनका सहयोग आर्य समाज चम्बा के मंत्री श्री विक्रमादित्य महाजन, स्वामी सुमेधानन्द शिष्य मण्डल के अध्यक्ष श्री अमर सिंह आर्य, श्री आचार्य योगराज, श्री अशोक आर्य, श्री रमेश शास्त्री, श्री पवन शास्त्री, श्री हेम त्रिपाठी, श्री रमेश शास्त्री आदि ने व्यवस्था में हाथ बंटाया। शोभा यात्रा में यज्ञ की झांकी तथा विद्यार्थियों द्वारा ओजस्वी व्याख्यानों की झांकी निकाली गई।

सायं 7.30 से 10 बजे तक भजन, संन्ध्या का शानदार कार्यक्रम आयोजित हुआ। इसकी अध्यक्षता स्वामी सवितानन्द जी महाराज ने की। यह कार्यक्रम 'एक शाम स्वामी सुमेधानन्द जी के नाम' के शीर्षक से आयोजित हुआ। युवा आर्य भजनोपदेशक श्री संदीप आर्य, श्री सती सुमन, श्री संजय शास्त्री, श्रीमती सरस्वती आर्या, श्रीमती ऋतु आर्या, श्री अमर सिंह आर्य आदि ने भजनों का प्रभावशाली कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

5 मई को प्रातः 7.30 से 10 बजे तक यज्ञ के उपरान्त शिक्षा सम्मेलन आयोजित किया गया। इस सम्मेलन की अध्यक्षता आचार्य रामानन्द जी ने की तथा स्वामी आर्यवेश जी, श्री हंसराज जी उपाध्यक्ष विधानसभा हिमाचल प्रदेश, आचार्य रामानन्द जी, श्री संदीप आर्य आदि ने सम्बोधित किया तथा दयानन्द उच्च माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं ने गीतों की प्रस्तुति दी।

शिक्षा सम्मेलन को मुख्य वक्ता के रूप में सम्बोधित करते हुए सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा निर्दिष्ट आर्ष गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को पुनः देश में प्रतिष्ठित करने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि वर्तमान पीढ़ी के बच्चों में नैतिक शिक्षा एवं संस्कारों की कमी आती जा रही है जिससे वे दिग्भ्रमित हो रहे हैं। अतः आवश्यकता है कि नई पीढ़ी को आवासीय आर्ष गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के माध्यम से संस्कार दिये जायें और उन्हें नैतिकता, ईमानदारी, परोपकार तथा सेवा आदि गुणों से सम्पन्न बनाया जाये।

आचार्य रामानन्द जी ने प्राचीन ऋषियों के उदाहरण देकर बताया कि गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के बिना बच्चे का सर्वांगीण विकास नहीं हो सकता। केवल भौतिक ज्ञान से मनुष्य उन्नति नहीं कर सकता बल्कि उसे आध्यात्मिक एवं नैतिक ज्ञान की भी आवश्यकता होती है।

श्री हंसराज जी ने महर्षि दयानन्द जी का स्मरण करते हुए कहा कि महर्षि जी का हमारे ऊपर इतने ऋण हैं जो गिनाये नहीं जा सकते। वे एक महान समाज सुधारक थे। हमें अपने जीवन में महर्षि दयानन्द जी की शिक्षाओं को अपनाना चाहिए और अपने जीवन को सफल बनाना चाहिए।

मध्यान्ह 2 से 5 बजे तक स्वामी सुमेधानन्द स्मृति सम्मेलन आयोजित किया गया जिसकी अध्यक्षता श्री सुरेन्द्र भारद्वाज ने की। सम्मेलन को श्री कमल ठाकुर, श्री राजकुमार ठाकुर, श्री अमर चन्द्र शर्मा, श्रीमती कमलेश कुमारी आदि ने सम्बोधित किया। इस सम्मेलन का संयोजन श्रीमती करूणा आर्या ने बड़ी कुशलता के साथ किया।

रात्रि 7.30 से 10 बजे तक राष्ट्र रक्षा सम्मेलन आयोजित किया गया। जिसके मुख्यअतिथि श्री अशोक कुमार गुलेरिया, प्राचार्य डी.ए.वी. वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, चम्बा थे। मुख्य वक्ता आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश के वरिष्ठ उपप्रधान श्री रामफल आर्य रहे। श्री रामफल आर्य का राष्ट्ररक्षा से सम्बन्धित सारगर्भित व्याख्यान हुआ। उनके अतिरिक्त श्री सतीश सुमन के भजनों का भी श्रोताओं ने आनन्द उठाया।

6 मई को प्रातः 7.30 से 10.30 बजे तक यज्ञ की पूर्णाहुति एवं यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी सवितानन्द जी का आशीर्वचन हुआ। तत्पश्चात् आर्य महासम्मेलन प्रारम्भ हुआ। मठ के अध्यक्ष आचार्य महावीर जी ने सभी आगन्तुक महानुभावों का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए प्रार्थना की कि वे प्रतिवर्ष हमें इसी प्रकार अपना आशीर्वाद देते रहें। मठ के कार्यों को हम निरन्तर आगे बढ़ाते रहेंगे। इस सम्मेलन में विद्यालय की अध्यापिकाएँ, कर्मचारी तथा समस्त कार्यकर्ताओं एवं अन्य गणमान्य महानुभावों का अंगवस्त्र एवं सत्यार्थ प्रकाश भेंटकर स्वामी आर्यवेश जी ने अपने कर–कमलों से सम्मान किया। रावी नदी के तट पर स्थित दयानन्द मठ चम्बा एक विशाल बट वृक्ष के रूप में विकसित हो चुका है। इसके माध्यम से हजारों शास्त्री, पुरोहित एवं विद्वान् तैयार हुए हैं जो आज विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत हैं।

समापन समारोह में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का ओजस्वी उद्बोधन सभी श्रोताओं के लिए विशेष प्रेरणादायक रहा। स्वामी जी ने सभी छात्र–छात्राओं एवं अभिभावकों को प्रेरित करते हुए कहा कि वे अपने–अपने घर में दान पात्र रखें और प्रतिदिन कम से कम 5 रुपये की राशि उस दान पात्र में डालते रहें तो एक वर्ष में लगभग 1800 रुपये उस दानपत्र में एकत्रित होंगे। इसे आप अपने विद्या एवं संस्कृति के प्रमुख केन्द्र दयानन्द मठ, चम्बा को दे सकते हैं। यदि ऐसा आप सभी करेंगे तो आप सबकी ओर से मठ की बहुत बड़ी सेवा होगी और मठ आर्थिक रूप से भी सक्षम हो सकेगा तथा यहाँ से और अधिक गतिविधियाँ संचालित हो सकेंगी। इस कार्यक्रम में हिमाचल के विभिन्न जिलों से तथा पंजाब, हरियाणा, दिल्ली एवं उत्तर प्रदेश आदि प्रान्तों से अनेक गणमान्य महानुभाव सम्मिलित हुए। कार्यक्रम अत्यन्त उत्साहवर्द्धक एवं प्रभावशाली रहा तथा भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। इस सम्पूर्ण कार्यक्रम की सफलता में जहाँ आचार्य महावीर जी का कुशल नेतृत्व था वहीं पर उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सरस्वती आर्या, उनकी पुत्रवधु श्रीमती करूणा आर्या, विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती बृजबाला गुप्ता तथा समस्त अध्यापिकाएँ, अध्यापक एवं कर्मचारी, आर्य समाज चम्बा के पदाधिकारी तथा मुख्य रूप से स्वामी सुमेधानन्द स्नातक मण्डल के समस्त पदाधिकारी एवं सदस्यों को श्रेय जाता है।

लोकप्रिय नेता एवं शिक्षाविद् चौ. निहाल सिंह तक्षक की 107वीं जयन्ती उनके पैतृक गांव भागवी, जिला–दादरी, हरियाणा में भव्यता के साथ मनाई गई

केन्द्रीय इस्पात मंत्री चौ. वीरेन्द्र सिंह जी मुख्य अतिथि सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी एवं श्री धर्मवीर जी सांसद कार्यक्रम के अध्यक्ष रहे

हजारों की संख्या में ग्रामीण जनता ने जयन्ती समारोह में भाग लिया

लोकप्रिय नेता चौ. निहाल सिंह तक्षक की 107वीं जयन्ती उनके पैतृक गांव भागवी, जिला–दादरी, हरियाणा में 1 मई, 2018 को धूमधाम से मनाई गई। यहाँ हनुमान मंदिर के विशाल सभागार में आयोजित उक्त समारोह में क्षेत्र की जनता ने उत्साह के साथ भाग लिया। इस अवसर पर केन्द्रीय इस्पात मंत्री एवं हरियाणा के लोकप्रिय नेता चौ. वीरेन्द्र सिंह जी मुख्य अतिथि एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। समारोह की अध्यक्षता भिवानी के सांसद श्री धर्मवीर सिंह जी ने की। उनके अतिरिक्त पूर्व राज्यपाल वयोवृद्ध बहन चन्द्रावती पूर्व मंत्री चौ. सत्यपाल सांगवान, श्री सोमवीर सिंह सांगवान, चौ. जगजीत सिंह पूर्व विधायक, श्री राजेन्द्र सिंह अहलावत समाजसेवी, अखिल भारतीय जाट सभा के महामंत्री डॉ. युद्धवीर सिंह, डॉ. गुणपाल सिंह एडवोकेट, श्री दलबीर सिंह गांधी, डॉ. प्रकाशवीर विद्यालंकार, श्रीमती किरण कलकल, डॉ. भूप सिंह आर्य, महाशय छोटूराम, श्री विजय प्रकाश, श्री इन्द्र सिंह आर्य पूर्व एस. डी.एम. आदि अनेक नेताओं एवं समाजसेवियों ने अपने विचार प्रस्तुत कर स्व. तक्षक साहब को श्रद्धांजलि अर्पित की।

मुख्य अतिथि चौ. वीरेन्द्र सिंह ने अपने भाषण के द्वारा जनसमूह को सम्बोधित करते हुए कहा कि वे अपने अधिकारों को पहचानें, नौकरी लेने के बदले देने वाले बनें। उन्होंने कहा कि केवल खेती के ऊपर निर्भर रहने से किसान कभी भी उन्नति नहीं कर सकता। उसे खेती के अतिरिक्त अन्य व्यवसायिक कार्यों को भी सीखना चाहिए।

विशिष्ट अतिथि के रूप में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने बताया कि स्व. श्री निहाल सिंह तक्षक केवल राजनैतिक नेता नहीं बल्कि वे एक प्रसिद्ध नेता थे। वे स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज के शिष्य थे। नबाव लोहारू के अत्याचारों के विरुद्ध आवाज उठाने के लिए लोहारू में अखिल समाज की स्थापना करके वे सर्वप्रथम आर्य समाज के संस्थापक अध्यक्ष बने थे और नबाव लोहारू को चुनौती दी थी। उन्होंने बिड़ला जी के आग्रह पर बिड़ला शिक्षा निधि के निदेशक पद को स्वीकार किया और खेतड़ी, बीकानेर, राजगढ़, लोहारू, महेन्द्रगढ़, दादरी, जीन्द तथा सफीदों आदि रियासतों में लगभग साढ़े चार सौ स्कूल खोलकर शिक्षा के क्षेत्र में जबरदस्त क्रांति की। उन्होंने गांव में जहां पानी नहीं था वहाँ पर कुंए भी बनवाये तथा समाज की सेवा में अन्य महत्त्वपूर्ण कार्य करके वे लोकप्रिय हुए। वे पहले जीन्द और उसके बाद पेप्सू राज्य में मंत्री बने और अपने क्षेत्र की विशेष सेवा की। वे इतने प्रभावशाली नेता थे कि जब उन्होंने कांग्रेस छोड़कर केन्द्रीय चुनाव लड़ा तो उनके चुनाव में स्वयं पं. जवाहर लाल नेहरू प्रधानमंत्री होते हुए चुनाव प्रचार में उन्हें हराने के लिए आये थे। उनका बहुत बड़ा राजनैतिक व्यक्तित्व था। वे संविधान सभा के सदस्य थे और सरदार बल्लभ भाई पटेल के प्रमुख अनुयायियों में से एक थे। भारत के पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह को उन्होंने ही पटवारी पद से इस्तीफा दिलवाकर प्रजा मण्डल के कार्य में लगाया था। आर्य समाज के विचारों से वे सदैव ओत–प्रोत रहे। आर्य समाज के वीतराग संन्यासी स्वामी ओमानन्द जी, स्वामी इन्द्रवेश जी तथा स्वामी अग्निवेश जी से वे निरन्तर प्रेरणा लेते रहते थे। आर्य समाज के नेता स्व. प्रो. शेर सिंह उनके विशेष मित्रों में से एक थे। ऐसे लोकप्रिय नेता को स्मरण करते हुए आवश्यकता है कि उनके नाम से किसी भी विश्वविद्यालय में पीठ स्थापित की जाये और उनके कार्यों एवं विचारों पर शोध किया जाये। आयोजन कर्ताओं की ओर से चौ. निहाल सिंह तक्षक के स्मृति में एक विशाल शिक्षण संस्था स्थापित करने का प्रस्ताव केन्द्रीय मंत्री श्री वीरेन्द्र सिंह के समक्ष प्रस्तुत किया गया। जिस पर उन्होंने पूरा सहयोग करने का आश्वासन दिया और चौ. निहाल सिंह तक्षक की स्मृति में बनाये जाने वाले ट्रस्ट के लिए 10 लाख रुपये की अनुदान राशि देने की भी घोषणा की।

समारोह के अध्यक्ष श्री धर्मवीर सांसद ने भी स्व. तक्षक जी को अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर चौ. निहाल सिंह तक्षक के जीवन एवं कार्यों पर उनके विशेष अनुयायी स्व. चौ. सूबे सिंह एस.डी.एम. द्वारा तैयार कराई गई पुस्तक का विमोचन भी किया गया। यह विमोचन चौ. वीरेन्द्र सिंह, स्वामी आर्यवेश जी तथा श्री धर्मवीर सांसद के कर–कमलों से हुआ। इस पुस्तक के सम्पादक आर्य समाज के प्रखर लेखक, ओजस्वी वक्ता एवं प्रसिद्ध विद्वान् डॉ. प्रकाशवीर विद्यालंकार भी विमोचन के अवसर पर मंच पर विराजमान थे। उन्होंने पुस्तक की संक्षिप्त विवेचना करते हुए बताया कि इस पुस्तक को लिखने में मुझे स्व. चौ. सूबे सिंह जी ने प्रेरणा दी तथा महाशय छोटूराम आर्य एवं अनेक विद्वानों ने इसमें मेरा सहयोग किया। जयन्ती समारोह विशेष उत्साह के वातावरण में सम्पन्न हुआ। इस समारोह का मंच संचालन श्री रमेश तक्षक ने संभाला तथा आयोजन श्री संजीव तक्षक एडवोकेट ने किया।

छः दिवसीय आर्य कन्या संस्कार निर्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर का समापन पारितोषिक वितरण तथा कन्याओं के भव्य प्रदर्शन के साथ सम्पन्न।

बेटियों को अपरिचितों से ज्यादा खतरा परिचितों से, इस दुर्भाग्य पूर्ण स्थिति में ऐसे संस्कार शिविर ही उपाय

– जस्टिस प्रशान्त अग्रवाल

जयपुर, छः दिवसीय आर्य कन्या संस्कार निर्माण, आत्मरक्षा प्रशिक्षण एवं व्यक्तित्व विकास शिविर आज मुहाना मंडी रामपुरा रोड स्थित सैनी नर्सिंग कॉलेज के संस्कार भवन में सम्पन्न हुआ।

एक से 6 मई तक चले इस शिविर में आत्मरक्षा, स्वास्थ्य रक्षा, बौद्धिक उन्नति एवं आत्मबल वृद्धि हेतु प्रशिक्षण दिया गया। आर्य समाज जयपुर दक्षिण, मानव निर्माण एवं विश्व शांति संस्थान, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद, रिया इंटरनेशनल स्कूल सांगानेर एवं जी.एल.सैनी नर्सिंग कॉलेज के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस शिविर समापन पर मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति प्रशान्त अग्रवाल रहे। अग्रवाल ने देश में घटित घृणित घटनाओं को दुखद व शर्मनाक बताया तथा कहा कि बेटियों को खतरा अपरिचितों से ज्यादा परिचितों से है जिसका उपचार ऐसे संस्कार शिविर ही है।

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद प्रदेशाध्यक्ष यशपाल "यश" ने कहा कि बेटियों में आत्मविश्वास के लिए कमाण्डों ट्रेनिंग, कराटे, लाठी संचालन व साहस हिम्मत हेतु सर्वशक्तिमान ईश्वर को जानने तथा प्रभु भरोसे का अहसास कराने के लिए ध्यान, उपासना, यज्ञ, आत्मनिरीक्षण तथा अभ्यास कराया गया। बेटियों ने हम किसी से कम नहीं की हुंकार भरी।

शिविर शुभारंभ पर वहादुर नौ वर्षीय बेटी अनिका जैमिनी आई जिसे प्रेरणादायक हौसले के लिए सम्मानित किया गया। शिक्षाविद् आर.सी. शर्मा डायरेक्टर रिया इंटरनेशनल स्कूल तथा विल्फ्रेड कालेज के ध्यानसिह ने ऐसे शिविर आयोजन हेतु आभार जताया। शिविर संचालन हरियाणा सरकार द्वारा बेटी बचाओ अभियान के लिए सम्मानित समर्पित बहनें पूनम एवं प्रवेश आर्या ने किया।

तालियों की गड़गड़ाहट के बीच अल्प काल में प्राप्त प्रशिक्षण के प्रदर्शन से संस्कार भवन गूंज उठा। संयोजक श्रीमती सुधा मित्तल ने शिक्षकों को सम्मानित किया। कार्यक्रम में अनेक सामाजिक आध्यात्मिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया।

विदित हो कि एक मई, 2018 को इस 6 दिवसीय संस्कार निर्माण प्रशिक्षण एवं व्यक्तित्व विकास शिविर का विधिवत उद्घाटन ध्वजारोहण के साथ सम्पन्न हुआ। शिविर का शुभारम्भ बेटी बचाओ अभियान के लिए सम्मानित राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या तथा संयोजक बहन प्रवेश आर्या व विशिष्ट अतिथि शिक्षाविद् श्री आर.सी. शर्मा डाइरेक्टर रिया इण्टरनेशनल स्कूल ने किया। इस शिविर में निरन्तर 6 दिनों तक बालिकाओं को आत्मरक्षा हेतु लाठी का अभ्यास तथा कराटे की विधि समझाई गई। बौद्धिक उन्नति एवं आत्मबल वृद्धि हेतु संन्ध्या, उपासना तथा इसके महत्त्व का दिग्दर्शन कराया गया। रोहतक से आई शिक्षिका सुश्री सुमन ने पी.टी. व योग का अभ्यास कराया। विभिन्न अवसरों पर आयोजित कार्यक्रमों में बालिकाओं ने महिलाओं पर होने वाले अपराधों पर सरकार व समाज के रवैये पर क्षोभ व्यक्त किया और कहा कि अपराधियों के हौसले बुलन्द रहना शर्मनाक है। इस अवसर पर डी.ए.वी. के रिजनल डाइरेक्टर प्रो. एम.एल. गोयल ने प्रोजेक्टर के माध्यम से बेटियों को आत्मरक्षा के गुर सिखाये तथा दुराचारियों के द्वारा अपनाये जाने वाले हथकंडों की जानकारी दी। शिविर संयोजक श्रीमती सुधा मित्तल समन्वयक डॉ. प्रमोद पाल, स्वागताध्यक्ष डॉ. सुमित्रा आर्य व सुनील अरोड़ा ने शिविर की सफलता में विशेष परिश्रम किया।

15 मई पुण्य तिथि पर विशेष

मूर्धन्य संन्यासी एवं वैदिक सिद्धान्तों के निष्ठावान प्रचारक स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती

– डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया

आर्य जगत् के प्रतिष्ठित संन्यासी, प्रकाण्ड वैदिक विद्वान्, मौलिक चिन्तक, प्रभविष्णु प्रवचनकर्ता, यशस्वी लेखक, स्तरीय वैदिक ग्रन्थों के प्रकाशक, तत्त्ववेत्ता, योग शिरोमणि, आदित्य ब्रह्मचारी, सर्वस्व त्यागी, आदर्श, आचार्य महर्षि दयानन्द जी के समर्पित सेनानी, वैदिक सिद्धान्तों के निष्ठावान प्रचारक, स्वतंत्रता सेनानी, राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रबल समर्थक, गौरक्षा आन्दोलन के पुरोधा, अध्यात्मचेत्ता, देश–विदेश में आर्ष विचारधारा, वैदिक दर्शन एवं मानव मूल्यों के प्रचारक–प्रसारक स्वामी दीक्षानन्द जी बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। समस्त प्रकार की ऐषणाओं से मुक्त मुक्ति मार्ग के पथिक स्वामी दीक्षानन्द जी का आर्य समाज के मिशन को आगे बढ़ाने में अत्यधिक महत्त्वपूर्ण योगदान है। वे आर्य जगत् के उन कुछ विरल संन्यासियों में से एक थे जो वेद, विद्या पारंगत थे। जिनकी कथनी करनी एक थी तथा जिनका समस्त जीवन 'मनुर्भव' का दिव्य सन्देश देने के लिए समर्पित था। लोकोपकार की भावना उनमें कूट–कूट कर भरी थी और वे सच्चे अर्थों में संन्यासी थे।

स्वामी दीक्षानन्द जी का जन्म 10 जून, 1918 ई. को मध्यम वर्गीय कायस्थ परिवार में हुआ था। उनका बचपन का नाम कृष्ण स्वरूप था। प्रारम्भिक शिक्षा के उपरान्त उन्होंने उपदेशक विद्यालय लाहौर एवं गुरुकुल भण्टिडा में एकाग्रचित्त होकर अध्ययन किया। बचपन से ही शिक्षण एवं अध्यात्म के प्रचार में उनकी रुचि थी। अध्ययनकाल में उनके प्रमुख गुरु पं. बुद्धदेव विद्यालंकार थे जो बाद में समर्पणानन्द के नाम से विख्यात हुए। इनके प्रति स्वामी दीक्षानन्द जी के मन में अत्यन्त समादर एवं श्रद्धा का भाव अन्त तक बना रहा। अपनी शिक्षा सम्पन्न हो जाने के उपरान्त कृष्ण स्वरूप जी ने उपदेशक विद्यालय भण्टिडा की स्थापना की। जहाँ वे आचार्य कृष्ण के नाम से जाने जाते थे। संन्यास आश्रम में प्रविष्ट होने के पूर्व तक वे इसी नाम से ख्यात रहे। गुरुकुल प्रभात आश्रम टिकरी मेरठ, उ. प्र. में सन् 1948 से सन् 1956 तक उन्होंने आचार्य पद को सुशोभित किया। आचार्य कृष्ण ने सन् 1975 में आर्य समाज के शताब्दी समारोह में स्वामी सत्यप्रकाश जी से संन्यास की दीक्षा ली और वे स्वामी दीक्षानन्द जी के नाम से सुविख्यात हो गये।

वैदिक विषयों में शोध के प्रति स्वामी दीक्षानन्द जी की गहरी रुचि थी। अतः सन् 1978 ई. में अपने श्रद्धेय गुरु स्वामी समर्पणानन्द जी की स्मृति को अक्षुण्ण रखने के लिए उनके नाम पर 'समर्पण शोध संस्थान' की स्थापना की। इस संस्थान के माध्यम से उन्होंने न केवल मौलिक अनुसंधान के लिए शोधार्थियों को प्रेरित किया वरन वैदिक साहित्य से जुड़े बहुत से स्तरीय ग्रन्थों का प्रकाशन भी किया।

स्वामी दीक्षानन्द जी वाग्मी वक्ता ही नहीं सिद्धहस्त लेखक भी थे। वे सच्चे अर्थों में तपस्वी थे। उनके ग्रन्थों में उनके चिन्तन की दीप्ति और विश्लेषण क्षमता के दर्शन होते हैं। यों तो उनके ग्रन्थों की संख्या बहुत बड़ी है, पर उनके कुछ प्रमुख ग्रन्थ हैं – 'मृत्युंजय सर्वस्व', 'अग्निहोत्र सर्वस्व', 'उपनयन सर्वस्व', 'ओंकार सर्वस्व', 'व्यवहार सर्वस्व', 'स्वाध्याय सर्वस्व', 'नाम सर्वस्व', 'दो पुटन के बीच', 'सत्यार्थ कल्पतरु ए लविंग टोकन', 'वैदिक कर्मकाण्ड पद्धति', बाल्मिकी के पुरुषोत्तम राम', 'गुरुकुल शतकम्', 'सम्राट शतकम्' आदि उनका प्रचुर लेखन उनकी विद्वता, स्वाध्यायी प्रवृत्ति, श्रम साधना, गुरु गम्भीर विवेचन–विश्लेषण विषय की अतल गहराईयों में पैठ एवं मौलिक चिन्तन का साक्षी है। उनका तल स्पर्शी लेखन समाधिस्थ

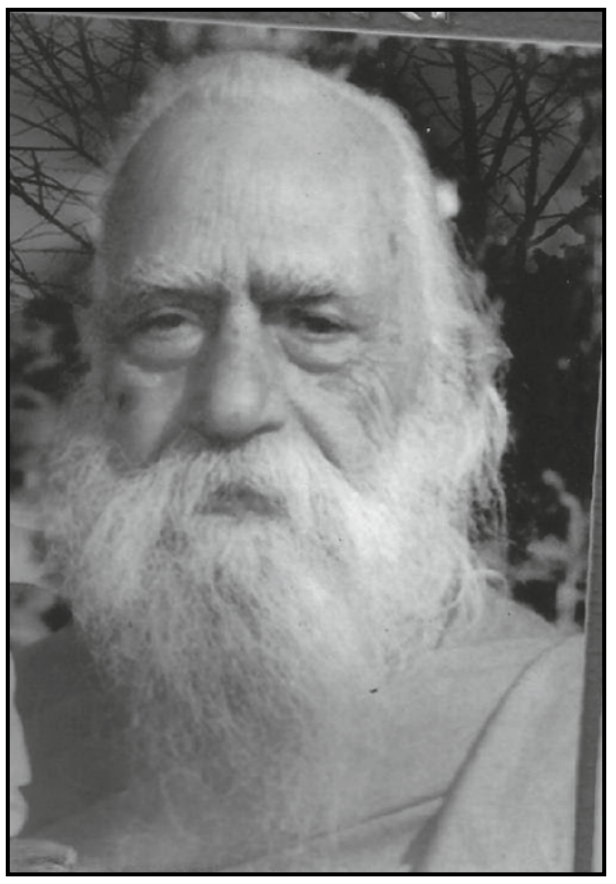

अवस्था में लिखा गया लगता है और इससे आर्ष साहित्य साहित्य की निश्चय ही श्रीवृद्धि हुई है। यद्यपि उनका समग्र लेखन तर्क प्रमाण पुरस्सर और वैज्ञानिक दृष्टि से ओत–प्रोत है तथापि उसे हृदयंगम करने में कोई कठिनाई नहीं होती। उनका लेखन पाठकों के लिए प्रेरक और दिशा–निर्देशक है। उनके शास्त्रानुमोदित मन्तव्यों – उपदेशों पर आचरण कर कोई भी पाठक या साधक प्रेय से श्रेय एवं अन्नमय कोष से आनन्दमय कोष की ओर प्रस्थान कर सकता है।

स्वामी दीक्षानन्द जी ने बहुत से ग्रन्थों का सम्पादन–प्रकाशन कर माँ भारती के भण्डार को भरा तथा जन–जन तक वैदिक मान्यताओं को पहुँचाने का भरसक प्रयास किया। 'समर्पण शोध संस्थान' से उनके द्वारा प्रकाशित कुछ ग्रन्थों के नाम हैं – 'वैदिक उपदेश माला', 'पाणिनी प्रवेशिका', 'ऋग्वेद मण्डल मणिसूत्र', 'यजुर्वेद अथर्ववेद भाष्यम्', 'वैदिक नारी', 'आर्ष ज्योति', 'ऋग्वेद ज्योति', 'सामवेद भाष्यम्', 'समाज का कायाकल्प', 'श्रुति सौरभ', 'वेदों का यथार्थ स्वरूप', 'वैदिक दर्शन', 'वैदिक स्वर्ग', 'अनादि तत्त्व', 'योगेश्वर कृष्ण' आदि कहने की आवश्यकता नहीं कि इन ग्रन्थों के स्वाध्याय से कोई भी व्यक्ति आर्ष सिद्धान्तों से परिचय प्राप्त कर विद्वान और ज्ञानी बन सकता है तथा इन पर आचरण कर आत्मोत्कर्ष को प्राप्त कर सकता है। आचरण विहीन, कोरा ज्ञान तो किसी काम का नहीं। ऐसे विद्वान् को तो वेद भी पवित्र नहीं कर सकते। आचारहीनम् न पुनन्ति वेदाः।

स्वामी दीक्षानन्द जी तलस्पर्शी वैदिक विद्वान् एवं तत्त्वदर्शी ऋषि थे। आर्य समाज एवं आर्ष सिद्धान्तों के प्रति वे सर्वात्मना समर्पित थे। सत्य सनातन वैदिक सिद्धान्तों को वे जन–जन तक पहुँचाना चाहते थे। वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार की उनमें ललक थी। 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' के स्वप्न को वे साकार करना चाहते थे। अतः देश–विदेश में उन्होंने प्राण–पण से वैदिक दर्शन आर्य समाज की मान्यताओं एवं मानव मूल्यों का प्रचार–प्रसार किया। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होंने मॉरिशस, दक्षिण अफ्रीका, डरबन, नैरोबी, केन्या, पूर्वी अफ्रीका आदि देशों में वेद प्रचार का महत्त्वपूर्ण कार्य किया। अपने ज्ञानवर्द्धक शास्त्र सम्मत, वेदानुकूल, प्रभावपूर्ण प्रवचनों से उन्होंने असंख्य लोगों के जीवन का निर्माण किया। उन्हें यज्ञ संस्कृति से जोड़ा, आत्मोन्मुख किया तथा दुर्गुणों का परित्याग कर सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। मैं स्वयं को सौभाग्यशाली मानता हूँ कि मुझे स्वामी दीक्षानन्द जी के प्रेरक प्रवचन सुनने के अनेक अवसर मिले। आर्य समाज, बी–2 ब्लाक, जनकपुरी, दिल्ली एवं अन्य आर्य समाजों में भी।

स्वामी दीक्षानन्द जी की अग्निहोत्र में गहरी निष्ठा थी। वे यज्ञानुष्ठान को विधि–विधान और श्रद्धा के साथ करने के पक्षधर थे। वे यज्ञ की प्रक्रिया और याज्ञिक विश्लेषण में बहुत दक्ष थे। यज्ञाग्नि को बार–बार चिमटे से छेड़ने के वे विरोधी थे। उनका कहना था कि यज्ञाग्नि को सहज स्वाभाविक रूप में प्रज्ज्वलित होने दीजिए और जब तक बहुत विवशता न हो उसके साथ छेड़छाड़ न कीजिए।

स्वामी दीक्षानन्द जी अग्नि के समान तेजस्वी और सर्व–त्यागी प्रवृत्ति के संन्यासी थे। भारत के महामहिम राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह ने उन्हें योग शिरोमणि की उपाधि से विभूषित किया था। स्वामी जी हैदराबाद मुक्ति सत्याग्रह 1939 के सेनानी थे। वे बन्दी बनाये गये और 6 महीने तक कारावास में रहे। सन् 1957 ई. में चण्डीगढ़ के हिन्दी सत्याग्रह के वे सक्रिय सहभागी थे। तथा सन् 1967 में दिल्ली में हुए गौरक्षा आन्दोलन में उन्होंने एक जत्थे का नेतृत्व किया था। 'कुर्वन्नेवेह कर्माणि' का आदर्श यावज्जीवन उनके सामने रहा। दिल्ली में पंचभौतिक शरीर का दिनांक 15 मई, 2003 को परित्याग कर वे सद्गति को प्राप्त हुए।

उनकी पावन स्मृति में उनकी पुण्यतिथि के अवसर पर उनके परम श्रद्धालु भक्त श्री दर्शन कुमार जी अग्निहोत्री, वैदिक साधन आश्रम तपोवन, नालापानी, देहरादून में स्वामी दीक्षानन्द स्मृति दिवस का आयोजन कर अनेक विद्वानों को सम्मानित करते हैं। स्वामी दीक्षानन्द जी के 11वें स्मृति दिवस के अवसर पर वे मुझ अकिंचन को भी 11 मई, 2014 को 'वेदश्री' सम्मान से अलंकृत कर चुके हैं। उनके इस प्रयास की जितनी सराहना की जाये कम है।

वैदिक सिद्धान्तों के निष्ठावान प्रचारक आर्य समाज के अनन्य सेवक मौलिक चिन्तन से युक्त दर्जनों ग्रन्थों के प्रणेता, अनेकों आन्दोलनों के सक्रिय सहभागी, मूर्धन्य संन्यासी श्री स्वामी दीक्षानन्द जी अपने पार्थिव शरीर से आज हमारे बीच नहीं हैं पर वे अपने कर्तृत्व के बल पर यावच्चन्द्र दिवाकरौ जीवित रहेंगे।

जयन्ति ते सुकृतिनो रससिद्धाः कवीश्वराः।
नास्ति येषां यशः काये जरामरणजं भयः।।

– बी–3/79, जनकपुरी, नई दिल्ली–110058,
मो.:–9718479970

धियो यो नः प्रचोदयात्

– डॉ. धर्मानन्द शर्मा, वैदिक शोध संस्थानम्, पंजाब विश्वविद्यालयः होशयारपुरम् (पंजाब)

पुरावृत्तानुसन्धानपरम्परायां विशिष्यते खलु देवशास्त्रम्। सुकीर्घकालाधिगम्यतेऽविच्छिन्नाऽक्षुण्णा चास्य चिन्तन परम्परा। चाक्षुषपदार्थेषु चैतन्याभिमानं दैवत्वारोपणं चास्य वैशिष्ट्यम्। यः केऽपि पदार्थः प्रभवयति मानवजीवनं हिताहितप्रतिविधानेन स स्तूयते गीयते चवैदिक ऋषिभिः। तेन हि पृथिव्याकाशनदीनदपर्वतादयः सर्वे सर्गपदार्थाः देवत्वमादधाना उपासनायोग्यत्वमगच्छन्। मानवीकरणं चेतनीकरणं चैतदार्याणां वैदिकदेवतावादस्य विशिष्टं लक्षणं मन्यते मनीषी **मैकडानलः।**

महीयते खलु वैदिकवांगमये सवितुः स्थानम्। सवितादेव एव द्विजैरनुष्ठीयमानेषूपनयनसंस्कारेषु गुरुमन्त्रत्वेनानुश्रूयते। प्रथितोऽद्यापि गायत्रीमन्त्रः सर्वकार्येषु सवितारं स्तूयमानः। भौतिकपिण्डोऽयं कालान्तरे धातृनेतृशब्दवद् व्यावहारिकशक्तिरूपेणाभ्युपगच्छन्नवलोक्यते। परम्परा प्रसादात् प्रमादादज्ञानाद्वयं सूर्यस्य पर्यायत्वेन विशेषणत्वेन च प्रयुञ्जानो दृश्यते। भ्रान्तिविलसितमिदं सवितासूर्यसमीकरणं नूनं सर्वथा न मर्षणीयम्। न सविता नाम कश्चिद् धर्मो गुणो वा कश्चित्पदार्थविशेषस्य। पदार्थान्तरवत्सविताऽपि स्वतन्त्र एवास्ति प्राकृतिकः पिण्डः।

वस्तुतः कोऽसौ पुनः सविता?नायं प्रश्नः सर्वथाऽचर्चितपूर्वः। न तथापि चराचरत्वेन याथातथ्येनाधिगतावितथस्वरूपः। प्रायेण भाष्यकाराः सवितारं सूर्यस्य विशेषणत्वेन पर्यायत्वेन चाभ्युपगम्यमाना दृश्यन्ते। परंच सविता विषयकान् मन्त्रानालोच्यं सुव्यक्तं भवति, यन्नायं कथमपि सूर्यः। न ह्यास्य कथमपि सर्वथा संवादः सूर्येण। नूनुमस्ति द्वयोः किञ्चिदनतिक्रमणीयं साम्यम्। तदेव साम्यं समीक्ष्य प्राचीनैर्भाष्यकारैस्तेषामेव पन्थानमनुसरिद्भिराधुनिकैश्चापि समीक्षकैः सविता सूर्ययोरभेदः साधितः। प्रकाशकत्वं गतिशीलत्वं चोभयोः समानो गुणः। द्वयोरेव च प्रेरणा पणेन जगदिदं प्राणि व्यूहश्चात्रत्यो विविधेषु व्यापारान्तरेषु व्यापृतो भवति। यश्चास्ति द्वयोः प्रकृतिगतं वैषम्यं न तदनल्पम्। सदैव वैषम्यं विभाव्य केचन विद्वानसो द्वित्रा एव किमपि तर्कयन्ति सर्वथऽतर्कितपूर्वम्। अनुपेक्षणीय वचनानां तेषामप्रतिहतवचांसि नूनं ध्यातव्यानि सानुग्रहधिया धीधनिभिरनुसन्धित्सुभिः। पूर्वापरमन्त्राकलनसाकल्येन परीक्ष्य तत्रत्यं तत्त्वं तन्मत एव बद्धपक्षपातोऽहं तत्पक्षक्षोदाय मोदाय चाभिनवानुसन्धित्षूणां किमपि प्रमाणत्वेन विनिवेदयामि।

1. निखिलेऽपि वैदिकवाङ्मये सूर्यस्य दिवाप्रकाशकत्वेन सवितुश्च रात्रिप्रकाशकत्वेन स्तुतयो दृश्यन्ते। (ऋग्वेदे – 1-35-1, 1-35-10, 2-28-4 इत्यादिमन्त्रेषु) तेन च सूर्यो द्युपतिः, सविता च निशापतिः। सवितुश्च कुत्रचिन्नक्तं दिवं प्रकाशोऽपि श्रूयते न पुनः सूर्यस्य क्वचिद् रात्रिप्रकाशत्वम् अवलोक्यते। अस्तं गतेऽति सूर्ये न सिवताऽस्तमेति स तु सूर्यप्रकाशाभावे मार्गं दिशति प्राणिनः (ऋग्वेदे 2-83-3, 1-35-2, 27-76-1, 5-82-8 इत्यादिषु)।

2. विशिष्यते हि सविता 'अमति' इति विशेषणविशेषेण। विशेषणेनानेन सवितुः प्रकाशस्य विश्रान्तिविरहत्वमुपपद्यते न पुनः सूर्यस्य प्रकाशे तत् तथा। न सूर्यप्रकाशो विश्रान्तिरहितः। गुणेनानेन भिद्यते सर्वथा सविता सूर्यात्। अन्तरिक्षवैज्ञानिका अपि समर्थयन्ति सूर्यप्रकाशस्य विश्रान्तिधर्मत्वम्। अपरत्र च सविता स्तूयते 'अमति' शक्तिमादधानः। शक्तिरेषा विभिन्नकालं सवितुः प्रकाशस्योदयास्तित्वं द्योतयति। क्षणमुदयं क्षणं चास्तं प्रतिदिशन् सविता नूनमद्भुतो विभर्ति गुणः।

3. सूर्यरश्मीनां 'ध्रुवासः' इति विशेषणं सवितुश्च **'गभीरवेपा'** इति। **'ध्रुवासः'** इति विशेषणं तु सूर्यरश्मीणां निष्कम्पकत्वमाख्यापयति। 'गभीरवेपा' च सवितुः रश्मीनां स्पदनत्वं कम्पनत्वं वा प्रथयति। एकस्मिन् निष्पदनत्वमपरस्मिन् च सर्वथा निश्चलत्वमिति सुतरां भिद्यते द्वयोर्गुणधर्मः।

4. श्रूयन्ते हि सूर्यस्य सप्ताश्वाः (ऋग् 5-45-9 इत्यादिषु) ये खलु नयन्ति तद्रथमवितरतम्। सवितुश्च द्वावेवाश्वौ प्रायेण सर्वत्र श्रूयेते। (ऋग् 1-35-5) तौ च श्वेतचरणैः सवितुः द्विरावृत्तं रथं नयतः। सुतरां भिद्यते द्वयोः रथस्य स्वरूपं संख्यां चाश्रवानां गतिरध्वानं च।

5. **'अष्टो व्याख्यात्ककुभः'** (ऋग्. 1-35-8) इति मन्त्रेण ज्ञायते यत् सविता भूभागतोऽत्यन्तं समीपं राजते। त्रियोजनमतिक्रम्य तस्य रश्मयो भुवि पतन्ति। सूर्यस्य शतयोजनदूरादापतन्ति रश्मयः।

तदेवं सन्ति शतशः प्रमाणानि। यानि द्वयोः सुतरां साधयन्ति भेदम्। कोऽयं पुनरसौ प्राकृतः पिण्डो यो हि पुण्यश्लोकैरस्माकं पूर्वपुरुषैः ऋषिभिः साक्षात्कृतः। साक्षात्कृतधर्माणो हि ते कं पदार्थं साक्षात्कृत्य स्तुवन्ति स्म। अस्तु, भो! नहं किमप्यभिनवमुन्मिषामि। राँथामहोदयेन त्वस्य तुलना ग्रीकस्य **'हर्मेसात्'** कृता यो हि योजयति अहोरात्रसम्बन्धः। न चात्रानुपेक्षणीयवचनः **सुव्वैया** महाभागोऽपि यस्तु योजयति सम्बन्धोऽस्य 'अरोरा' उपग्रहविशेषात्। स एव कारणं उत्तरी ध्रुवस्य षट्मासदीर्घनिशाव्यापाराणाम्। वचनस्त्वत्रावधेयं मनीषिणो बालगंगाधरतिलकस्यापि। तन्मते उत्तरीध्रुवप्रान्तादेवार्याः भारतं सम्प्राताः। तत्रैव साक्षात्कृतोऽयं सवितादेव किं **'अरोरा'** एव?यस्य धनुषाकारः। प्रकाशविम्बो घोटकद्वयमिव प्रतिभाति दर्शकाणाम्। अन्यो वा कश्चिदविचारितपूर्वो नूनं विचारार्हो विचारविद्भिः। अन्ते च तत्सवितुः प्रकाशाय **'धियो यो नः प्रचोदयात्'** इति कामयमानोऽहं सविता स्वरूपानुसन्धानाय सवितरमेव नौमि स्तौमि च।

– ***भारतोदयः से साभार***

अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन की तैयारियां जोरों पर सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के तूफानी दौरे

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन जो 6 से 8 जुलाई, 2018 को ऐतिहासिक गुरुकुल कांगड़ी के प्रांगण में होने जा रहा है की तैयारी के लिए सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने विभिन्न क्षेत्रों का दौरा प्रारम्भ कर दिया है। हिमाचल प्रदेश के आर्य सामाजिक कार्यकर्ताओं की एक महत्त्वपूर्ण बैठक दयानन्द मठ चम्बा में 6 मई, 2018 को स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती जन्मोत्सव समारोह के अवसर पर आयोजित करके स्वामी आर्यवेश जी ने अपना तूफानी दौरा प्रारम्भ किया।

जैनाबाद, रेवाड़ी

7 मई, 2018 को रेवाड़ी जिले के जैनाबाद गांव में रेवाड़ी तथा महेन्द्रगढ़ के प्रमुख कार्यकर्ताओं की बैठक करके उन्हें महासम्मेलन में अधिक से अधिक संख्या में आने का निमंत्रण दिया तथा धन–संग्रह की जिम्मेदारी लगाई।

आर्य समाज गन्नौर सोनीपत

8 मई, 2018 को प्रातः 8 बजे आर्य समाज गन्नौर पहुंचकर स्वामी सच्चिदानन्द जी सरस्वती एवं स्वामी आर्यवेश जी ने आर्य समाज के प्रधान श्री राकेश एवं पूर्व प्रधान श्री प्रताप चन्द भुटानी को धन एकत्रित करने तथा आर्य समाज की तरफ से अधिक से अधिक संख्या में हरिद्वार पहुंचने की जिम्मेदारी सौंपी।

आर्य समाज माडल टाउन, पानीपत

गन्नौर से आर्य समाज माडल टाउन, पानीपत पहुंचकर स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी सच्चिदानन्द जी व श्री मधुर प्रकाश जी ने माता शशि अग्रवाल तथा उनकी अन्य कार्यकर्ता बहनों के साथ महासम्मेलन की तैयारियों के सम्बन्ध में विस्तार से चर्चा की। उन्होंने श्रीमती सुमित्रा अहलावत जो स्त्री आर्य समाज की संरक्षिका हैं उनसे भी दूरभाष पर बात करके उनके पौत्र के स्वास्थ्य की जानकारी प्राप्त की। सुमित्रा जी के पौत्र अस्वस्थ होने के कारण दिल्ली के मैक्स अस्पताल में भर्ती थे।

पानीपत से कारवां करनाल पहुँचा

श्री सुभाष चौधरी के निवास पर भोजनादि करने के उपरान्त 21 हजार रुपये की राशि महासम्मेलन हेतु प्राप्त की और करनाल के प्रसिद्ध आर्यनेता समाजसेवी श्री लाजपत राय चौधरी के घर पर आर्य केन्द्रीय सभा, करनाल के प्रमुख अधिकारियों के साथ बैठक की। बैठक में सभा के प्रधान प्रो. आनन्द सिंह डांगी, श्री शांति प्रकाश आर्य एवं श्री भोपाल सिंह आर्य उपस्थित थे। आर्य समाज के संगठन एवं गुरुकुल महासम्मेलन के सम्बन्ध में विस्तृत चर्चा करने के उपरान्त महासम्मेलन के लिए विशेष सहयोग एवं अधिक से अधिक लोगों की उपस्थिति का आश्वासन प्राप्त करके स्वामी जी श्री सुभाष सैनी–नीलो खेड़ी से मिलने के लिए उनके निवास पर गये और उनसे एक टीन देसी घी लेकर सीधे यमुनानगर पहुँचे।

यमुनानगर में विभिन्न स्थानों पर बैठक

यमुनानगर में प्रसिद्ध आर्य नेता डॉ. गेंदाराम आर्य के निवास पर गुरुकुल आर्य महासम्मेलन के सम्बन्ध में संक्षिप्त चर्चा की और उनके सुपुत्र डॉ. संजय आर्य को धन–संग्रह का दायित्व सौंपा। श्री संजीव नरूला के घर रात्रि भोजन करके तथा महासम्मेलन हेतु उत्साहवर्द्धक आश्वासन प्राप्त करके वैदिक ज्ञान आश्रम अशोक नगर, यमुनानगर में रात्रि विश्राम किया। विदित हो कि यह आश्रम स्वामी सच्चिदानन्द जी महाराज का अपना आश्रम है।

9 मई, 2018 को प्रातः यज्ञ के उपरान्त आर्य समाज माडल टाउन, यमुनानगर में पहुँचकर स्वामी जी ने वहाँ के अधिकारियों को विशेष रूप से मंत्री श्री यश वर्मा को धन–संग्रह का दायित्व सौंपा जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर विशेष धनराशि एकत्रित करके देने का वचन दिया।

यमुनानगर से आर्य समाज ग्राम उड़िया

यमुनानगर से आर्य समाज ग्राम उड़िया में श्री राकेश आर्य के साथ बैठक की और उन्हें भी जिम्मेदारी सौंपी गई।

उड़िया से कन्या गुरुकुल देवधर

उड़िया से कन्या गुरुकुल देवधर जाकर गुरुकुल महासम्मेलन में सम्मिलित होने का निमंत्रण गुरुकुल के व्यवस्थापक एवं संचालक श्री ओम प्रकाश 'गुरु जी' को दिया गया और वे अत्यन्त प्रसन्न होकर इस कार्यक्रम के लिए बड़े उत्साहित हुए।

देवधर से आर्य समाज जगाधरी

देवधर से आर्य समाज जगाधरी एवं आर्य केन्द्रीय सभा जगाधरी के पदाधिकारियों के साथ श्री पंकज आर्य के घर पर विशेष बैठक आहूत की गई जिसमें श्री पंकज आर्य के अतिरिक्त श्री महेन्द्र सिंघल, डॉ. बंसल, श्री सुभाष एवं अन्य प्रमुख महानुभावों ने भाग लिया और उन्होंने स्वामी जी को आश्वस्त किया कि हम अधिक से अधिक आर्यजनों के साथ हरिद्वार पहुँचेंगे तथा 51 हजार रुपये की राशि अपने यहां से एकत्रित करके महासम्मेलन में भेंट करेंगे। इसी प्रकार यमुनानगर में ही डॉ. दिनेश सैनी तथा उनकी माता श्रीमती तारा सैनी जी ने भी विशेष आर्थिक सहयोग देकर स्वामीद्वय का स्वागत किया। डॉ. दिनेश सैनी ने 11 हजार रुपया और श्रीमती तारा सैनी ने अपनी सुपुत्री डॉ. मीनाक्षी सैनी की ओर से 11 हजार रुपया महासम्मेलन हेतु दान देकर सहयोग किया। रात को श्री मधुर प्रकाश और स्वामी आर्यवेश जी रोहतक पहुँचे।

गुरुकुल इण्टर नेशनल स्कूल जिवाना, बड़ौत, उ. प्र.

10 मई, 2018 को गुरुकुल इण्टर नेशनल स्कूल जिवाना, बड़ौत, उ. प्र. में जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा बागपत एवं विविध आर्य समाजों के पदाधिकारियों के साथ महत्त्वपूर्ण बैठक गुरुकुल के सभागार में आहूत की गई। जिसमें स्वामी आर्यवेश जी ने विशेष उद्बोधन देकर कार्यकर्ताओं को हरिद्वार महासम्मेलन की तैयारी में जुट जाने का आह्वान किया। जिला सभा के अधिकारियों ने बताया कि 13 मई, 2018 को उनकी एक साधारण सभा की विशेष बैठक बागपत में हो रही है जिसमें हमारे जिले की सभी आर्य समाजों को हरिद्वार महासम्मेलन में आने के लिए तथा अधिक से अधिक आर्थिक सहयोग इक्ट्ठा करने की जिम्मेदारी हम बांटेंगे। और हम यह घोषणा करते हैं कि किसी भी जिले से हमारा जिला पीछे नहीं रहेगा। हम पूरे मनोयोग से महासम्मेलन में अपनी शक्ति लगायेंगे। इस अवसर पर गुरुकुल इण्टर नेशनल स्कूल के संस्थापक प्रो. बलजीत सिंह आर्य ने 11 हजार रुपये की राशि देकर स्वामी जी का सम्मान किया। ग्राम पंचायत सिरसली के पूर्व प्रधान श्री सतवीर सिंह फौजी ने 51 हजार रुपये की राशि एकत्रित करके देने की घोषणा की। बैठक में कार्यकर्ता अत्यन्त उत्साहित थे।

अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन के अवसर पर साहित्य विक्रेताओं के लिए स्टालों का आरक्षण प्रारम्भ

अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन के अवसर पर आयोजित पुस्तक मेले के लिए स्टालों का आरक्षण प्रारम्भ हो गया है। इस अवसर पर देश–विदेश के हजारों आर्यजन तथा गणमान्य व्यक्ति पधारेंगे जिससे पुस्तक विक्रेता भाईयों को वैदिक साहित्य के प्रचार–प्रसार का सुनहरा अवसर प्राप्त होगा। असुविधा से बचने के लिए शीघ्रातिशीघ्र सभा के उपमंत्री श्री मधुर प्रकाश शास्त्री जी से मो.:–9810431857 पर सम्पर्क करके अपना स्टाल अविलम्ब अग्रिम बुक करा लें।

The foundation of human culture through Gurukul system of education

The Aarsh Paddhiti through out our country India and abroad the unified system of education is to be introduced. If all the gurukulas and Vedic Peeths fallow the same system in learning, there must be an unification in the light of our culture and civilization. Our faith in one god (the unseen power), matter and soul for the attainment of human goal.

This our attempt to be peace of mind, we have to lead the way of our life. The engine of modern education is abruptly derailed because of no harmonious sets of wheels or railings. There must be a set of educational system of improving the spiritual knowledge along with the physical ground. The Gurukul Type of education has great importance for the youth boy or girl. They have to undergo their critical age. We have to control their sexual urge. We should give them the teachings about the changes day-to-day happening in their lives. Body, mind and soul are affected by their thinking and actions. We have to safeguard the inherent powers. As you think, so shall you act is a granted fact. The gurukuli student's heart is demanded by the Acharya to move accordingly at the golden event of the student's admission the first dialogue of chanting the mantra- "Yajjo pavitam pramum pavitram.

ओं यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।

This, the student is bound and controlled to face all the prablems by having a psychological solution. This is the starting of becoming conscious steering his life's boat of sprituality, sincerity and serenity which are the parts of personality. The moral education is must to furnish the qualities of man's life. Bramhacharyen topsadeva mirtupaghnate that is to win lifelong chareer when the Brohamcharya is cherished and maintained. This is really a constructive side of student's life, befitting for today and to morrow. Purity of thoughts and clear vision are the essentials of human life, the so-called vedic philosophy.

Today, we are confronting the disobedience, treachery, rape etc. in the society. We think that we are not safe from ill-doings of the present generation. Even the boys of tender age are indulged in different criminalty. If we have to amend the generation, we have to amend ourselves and for this much we have to welcome the vedic vision in our educational centres. The groaning world is looking towards our vedic culture to soothe and comfort the brain. We are responsible to propogate the sanskaars from the sanskaar vidhi, written by mahrishi Dayanand. Only then, generation would be on the right path. This is the foundation of human culture.

- B. R. Sharma Vibhakar
Mo. :-9350451497, 7838765309

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/18-20
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2018-20]

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

ओ३म्

आर्य समाज के इतिहास में पहली बार

अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन

दिनांक : 6, 7 व 8 जुलाई, 2018

स्थान : गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार
(विद्यालय विभाग के प्रांगण में)

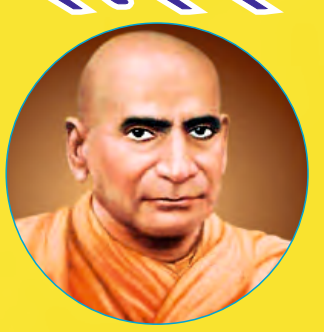

मान्यवर,

विश्व की समस्त आर्य समाजों के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन का आयोजन 6 से 8 जुलाई, 2018 को गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार, उत्तराखण्ड के प्रांगण में किया जा रहा है। आर्य समाज के इतिहास में यह पहला अवसर है जब समस्त गुरुकुलों का अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन हो रहा है। आप सभी से प्रार्थना है कि अधिक से अधिक संख्या में हरिद्वार पहुँचकर महासम्मेलन में शामिल हों तथा इस ऐतिहासिक आयोजन के साक्षी बनें।

मुख्य आकर्षण

1. देश–विदेश के गुरुकुलों में पढ़ने वाले छात्र–छात्राओं का अभूतपूर्व समागम
2. गुरुकुलों के छात्र–छात्राओं द्वारा आकर्षक एवं अद्भुत कार्यक्रमों की प्रस्तुति।
3. विख्यात आर्य संन्यासियों, वैदिक विद्वानों, आचार्यों, आचार्याओं, आर्यनेताओं एवं राजनेताओं की गरिमामयी उपस्थिति तथा भाषण।
4. सस्वर वेद पाठ, कंठस्थ वेद–वेदांग एवं अष्टाध्यायी आदि की प्रस्तुति।
5. संस्कृत संभाषण एवं नाटिकाओं आदि प्रतिभाओं का प्रदर्शन।
6. गुरुकुलों के इतिहास की शानदार प्रदर्शनी।
7. आर्ष शिक्षा प्रणाली को वैकल्पिक शिक्षा प्रणाली घोषित करने का प्रस्ताव।
8. समस्त गुरुकुलों के पाठ्यक्रम एवं कार्यशैली की एकरूपता का प्रयास।
9. आर्ष शिक्षा प्रणाली को और अधिक प्रभावशाली बनाने की योजना तैयार करना।

आप सभी से प्रार्थना है कि भारी संख्या में पधारकर तन–मन–धन से सहयोग करें।

आयोजक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

"महर्षि दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

दूरभाष :– 011–23274771, 23260985, ई–मेल : sarvadeshikarya@gmail.com, sarvadeshik@yahoo.co.in

।।ओ३म्।।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना

वेदाः ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद

घर–घर तक पहुँचाई जायेगी परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)

लागत मूल्य 4100/– रुपये

(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

भारी छूट पर उपलब्ध

महर्षि दयानन्द बोधोत्सव एवं आर्य समाज स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में 18 मार्च, 2018 तक अग्रिम धनराशि जमा कराने पर केवल 2800/– रुपये में प्राप्त कर सकेंगे।

4100/– रुपये का एक वेद सैट 25 प्रतिशत की छूट पर उपलब्ध है

10 अथवा उससे अधिक वेद सैट लेने पर 30 प्रतिशत की छूट दी जायेगी

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। डाक व्यय 200/– रुपये अलग से देना होगा। प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी। अपना आदेश **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

–: प्रकाशक :–

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

दूरभाष :- 011-23274771, 23260985 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत
यजुर्वेद भाष्य
भारी छूट पर उपलब्ध

250 रुपये मूल्य का यजुर्वेद भाष्य

मात्र 150 रुपये में दिया जा रहा है
(डाक व्यय अतिरिक्त)

(जल्दी करें ग्रन्थ सीमित मात्रा में ही उपलब्ध है)

प्रकाशक : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।